पाठ-13

सुखी राजकुमार

लेखक - ऑस्कर वाइल्ड

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास क्रम में मनुष्य ने अपने लिए सुख सुविधाओं का विस्तार किया और समाज में रहना भी सीखा। बुद्धि के विकास ने सिर्फ उसके लिए सुख की ही सृष्टि नहीं की वरन् उसकी भावनात्मक दुनिया को भी प्रभावित **किया**। उसे अन्य **प्राणी** जगत से अधिक संवेदनशील बनाया।

सभ्यता और समाज के विकास के साथ वह संवेदनशीलता दूसरों के सुख में सुखी और दूसरों के दुख में दुखी होने की क्षमता में विकसित होती गई और मनुष्यता के सर्वोच्च गुणों में गिनी जाने लगी।

सारांश

नगर में उत्तर की ओर एक **ऊँचे** से स्तम्भ पर सुखी राजकुमार की प्रतिमा स्थापित थी। मूर्ति पर हल्का स्वर्ण–पत्र मढ़ा था, **आँखों** के स्थान पर दो चमकदार नीलम थे और तलवार की मूठ में एक बड़ा सा लाल जड़ा था। लोग उस प्रतिमा के सौन्दर्य की बड़ी प्रशंसा करते थे। दिन भर उड़ने के बाद एक गोरेया रात को नगर के **समीप पहुँची** |

मैं **ठहरूँ कहाँ** ? उसने सोचा मैं समझ रही थी कि शहर मेरा स्वागत करेगा।

इतने में उसे **खंभे** पर लगी मूर्ति दिखी।

''आहा! मैं यहीं **ठहरूँगी**! यह बहुत अच्छा स्थान है। **यहाँ** काफी साफ हवा आ रही है।'' और वह मूर्ति के पैर के पास उतर गई। उसने चारों ओर देखा और वह कहने लगी– ''मेरा शयनागर (सोने का स्थान) स्वण का है और वह पंखों में **मुँह** छिपाकर सोने जा रही थी कि एक पानी की बड़ी सी बूंद टप से उस पर गिर पड़ी। ''ताज्जुब है'' उसने कहा आकाश में एक भी बादल नहीं हैं, तारे साफ–साफ चमक रहे हैं, फिर भी पानी बरस रहा है। इतने में दूसरी **बूँद** गिरी। इस प्रतिमा से

फायदा क्या, अगर यह वर्षा भी नहीं रोक सकती, उसने कहा चलो कोई दूसरा आश्रय **स्थान दूँढ़े**। उसने पंख खोले और तीसरी **बूँद गिर** पड़ी। उसने ऊपर देखा। राजकुमार की **आँखें डबडबा** रही थों और उसके सुनहले गाल पर **आँसू** ढुलक रहे थे। उसका चेहरा इतना भोला था कि गौरेया को दया आ गई। तुम कौन हो उसन पूछा, ''मैं सुखी राजकुमार **हूँ**'' फिर तुम रो क्यों रहे हो? पंख फड़फड़ाकर गौरेया ने कहा, तुमने तो मुझे बिल्कुल भिगो दिया है। मूर्ति ने उत्तर दिया, जब मैं जीवित था और मेरे सीने में मनुष्य का **हृदय** धड़कता था तब मेरा **आँसूओं** से परिचय नहीं हुआ था। मैं आनंद महल में रहता था **जहाँ** दुख को प्रवेश करने की इजाजत नहीं थी। दिन में मैं अपने उद्यान में विलास करता था और रात को नृत्य में लगा रहता था। मेरे उद्यान के चारों ओर एक प्राचीर थी, किन्तु मेरे चारों ओर इतना सौन्दर्य था कि मैंने कभी बाहर देखने का प्रयत्न नहीं किया। मैं जीता रहा आर मर गया। आज जब मैं मर गया **हूँ**, तो उन्होंने मुझे इतने **ऊँचे** पर स्थापित कर दिया है कि मैं संसार की सारी कुरूपता और दुख दर्द देख सकता **हूँ**। मेरे ही नगर मे इतना दुख है कि यद्यपि मेरा **हृदय** जस्ते का है, फिर भी फटा जा रहा है।

''अच्छा तो राजकुमार ठोस सोने का नहीं है, **गौरैया** ने सोचा मगर वह इतनी शिष्ट थी कि उसने यह बात जोर से नहीं कही। दूर बहुत दूर मूर्ति सुनहली आवाज में कहती रही एक गंदी सी गली में टूटा फूटा मकान है, उसकी एक खिड़की खुली है..... उसके अन्दर एक चौकी पर एक स्त्री बैठी है। उसका चेहरा दुबला और थका हुआ है और उसके हाथ सुई के घावों से क्षत विक्षत हैं। वह रानी की सर्वसुन्दरी अंगरक्षिका के नृत्य वसन पर फूल काढ़ रही है। एक कोने में उसका बच्चा बीमार पड़ा है। उसे बुखार है और वह फल मांग रहा है। **गौरैया** ओ नन्हीं **गौरैया** क्या तुम मेरी तलवार की मूठ में जगमगाता हुआ लाल निकालकर उसे नहीं दे आओगी.... मेरे पैर तो इस स्तम्भ में जड़े हैं और मैं चल नहीं सकता।

दक्षिण देश में लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे नील नदी पर उड़ रहे होंगे और कमल के फूलों से वार्तालाप करने के बाद राजाओं के मकबरों में सोते होंगे। राजा रंगीन ताबूत में सो रहा होगा। वह पीले वस्त्र में लिपटा होगा और मसालों से उसका अंग लेपन किया गया होगा। उसकी गर्दन में पुखराज का हार होगा और उसके हाथ सूखी पत्तियों की तरह होंगे। **गौरैया** ने कहा, **गौरैया**

सिर्फ आज रात को तुम मेरा काम कर दो। बच्चा प्यासा है–उदास भी है, ऊंह! मुझे बच्चों से जरा भी स्नेह नहीं है, **क्योंकि पिछले** बसंत में बच्चे रोज आकर मुझे ढेले मारा करते थे। राजकुमार इतना उदास था कि **गौरैया** को दया आ गई। **यहाँ** बहुत सर्दी पड़ने लगी लेकिन कोई बात नहीं मैं आज तुम्हारा काम कर **दूँगी**।

धन्यवाद, नन्हीं **गौरैया** राजकुमार ने कहा।

गौरैया ने राजकुमार की तलवार की मूठ से लाल निकाला और उसे अपनी चोंच में दबाकर उड़ चली। उड़ते वक्त वह गिरजाघर के शिखर के पास से गुजरी **जहाँ** श्वत संगमरमर से देवदूतों की मूर्ति बनी थी। वह उच्च प्रसाद के समीप से गुजरी और उसने नाच की आवाज सुनी। छज्जे पर एक सुन्दर किशोरी अपने प्रेमी के कंधे पर हाथ रखे हुए आयी।

वह नदी पर से गुजरी और जहाज के शिखरों पर लटकते हुए आकाशदीप **देखा**। अंत में वह उस टूटे फूटे मकान के समीप **पहुँची** और भीतर **झाँका**। बच्चा बुखार के कारण बिस्तर पर तड़प रहा था। वह फुदककर भीतर **पहुँची** और उसने उस स्त्री के पास की मेज पर लाल रख दिया। **माँ** थककर सो गई थी। वह बच्चे के सिरहाने उड़कर पंखों से हवा करने लगी।

''आह, कैसा अच्छा लग रहा है!" बच्चे ने कहा- "अब शायद मैं अच्छा हो रहा **हूँ**" और वह सो गया । **गौरैया** वापस आ गई और सो गई। जब दिन उगा तो वह नदी में गई और नहाई ''अच्छा आज रात में मिस्र देश **जाऊँगी**! आज वह उमंग से भरी थी। उसने शहर की सारी इमारत घूम डाली और वह गिरजाघर के शिखर पर बहुत देर तक बैठी रही। जब **चाँद** उगा तो वह राजकुमार के पास गई और बोली तुम्हें मिस्र में किसी से कुछ कहलाना तो नहीं है। मैं अभी–अभी जाने के लिए तैयार **हूँ**।

"गौरैया! **गौरैया**! **नन्ही गौरैया** ! क्या तुम आज रात को और नहीं रुक सकतीं। मूर्ति ने कहा शहर में दूर एक सिली हुई कोठरी में मुझे एक तरुण कलाकार दिख रहा है। वह कागजों से लदी मेज पर झुका है और उसके बगल में सूखे हुए फूल लगे हैं। उसके बाल भूरे हैं, उसके होठ

अनार के फूल की तरह लाल हैं, उसकी **आँखें** बड़ी सपनीली हैं, वह रंगमंच के लिए नया नाटक लिख रहा ह, मगर ठंड के मारे उसकी **अंगुलियाँ** नहीं चल रही हैं। अंगीठी में एक भी कोयला नही है और भूख से उसकी **आँखों** के सपने टूट रहे हैं। ''मिस्र में सब मेरी प्रतिक्षा कर रहे होंगे। कल सब साथी दूसरे प्रपात तक उड़ **जाएँगे**, **जहाँ** नरकुल की झाड़ियों में दरियाई घोड़े सोते हैं और संगमूसा की शिला पर मेम्मान देवता बैठा है।

(संगमूसा :– एक तरह का काला पत्थर)

(मेम्मान :– ग्रीक मिथक में इथोपिया का राजा)

रात भर वह तारों की ओर देखता है। भोर का तारा जब डूबने लगता है, तो वह खुशी से चीख पड़ता है और फिर चुप हो जाता है, लेकिन क्या केवल आज रात के लिए तुम रुक सकती हो।

अच्छा मैं आज रुक जातो **हूँ**। क्या दूसरा लाल उसे दे **आऊँ**? अफसोस! मेरे पास दूसरा लाल नहीं है, मेरे पास मेरी **आँखें** हैं, जो नीलम से बनी हैं, जो हज़ारों वर्ष पहले भारत से लाए गए थे। एक निकालकर उसे दे आओ। प्यारे राजकुमार ये मुझसे नहीं होगा, यह कहते हुए वह सिसककर रोने लगी।

प्यारी **गौरैया**! राजकुमार बोला तुम्हें मेरी बात माननी चाहिए। उसने राजकुमार की **आँख** का नीलम निकाल लिया और कोठरी की ओर उड़ चली । एक छेद से वह अन्दर घुस गई। कलाकार सिर झुकाए बैठा था, अतः उसने उसके पंखों की आवाज़ नहीं सुनी। जब उसने सिर उठाया, तो देखा कि मुर्झाए हुए फूलों पर बड़ा सा नीलम रखा था। ओह! मालूम होता है मेरा मोल लाग **आँक** रहे हैं। वह शायद किसी बड़े भारी प्रशंसक ने भेजा है। अब मैं अपना नाटक समाप्त कर **दूँगा**। **गौरैया** बन्दरगाह की ओर जाकर एक जहाज के मस्तूल पर बैठ गई। **वहाँ** कुछ मजदूर अपने सीने पर रस्सि**याँ** बांधे नांवें खींच रहे थे।

जब **सूरज** उगा, तो वह राजकुमार के पास आकर बोलो–''मैं तुमसे विदा **माँगने** आयी **हूँ**।"

प्यारी **गौरैया**! क्या आज रात को और नहीं ठहरोगी? देखो अब जाड़ा पड़ने लगा है। मिस्र में हरे भरे खजूर के कुंजों पर गर्म धूप छाई होगी। मेरे साथी एक पुराने मंदिर में घोंसला बना रहे

होगे। प्यारे राजकुमार मैं जा रही हूँ मगर मैं तुम्हें भूल नहीं सकती। अगर बसंत म जब मैं लौटूँगी तो तुम्हारे लिए एक लाल और एक नीलम लेती आऊँगी।

राजकुमार ने कहा- "नीचे गली में एक लड़की खड़ी है। उसका सौदा नाली में गिर गया है और वह रो रही है। यदि वह खाली हाथ घर जाएगी तो उसका पिता उसे मारेगा। उसके पैरों में जूते नहीं हैं, उसका सिर नंगा है, मेरी दूसरी आँख निकालकर उसे दो तो वह मार से बच जाएगी।

कहो तो मैं आज और रुक जाऊँगी मगर मैं तुम्हारी आँख नहीं निकालूँगी फिर तो तुम बिल्कुल ही अंधे हो जाओगे। गौरैया ने वैसा ही किया लड़की नीलम लेकर खुश हो गई और हँसकर घर की ओर भागी। गौरैया वापस आयी अब तुम अंधे हो इसलिए मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगी। नहीं- नहीं अब तुम मिस्र देश को जाओ। मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगी– गौरैया ने कहा और उसके पैरों पर सिर रखकर सो गई।

अगले दिन वह राजकमार के कंधों पर बैठकर भांति-भांति की कहानियाँ सुनाने लगी। लाल बगुलों की कहानी जो नील नदी के किनारे कतार में खड़े रहते हैं और माका पाते ही झपटकर सुनहली मछलियाँ चोंच म दबाकर उड़ जाते हैं। चन्द्रमा की घाटियों के राजा की कहानी, साँप की कहानी आदि।

प्यारी गौरैया! तुमने मुझे इतनी आश्चर्यजनक वस्तुएँ बताई लेकिन उनसे भी ज्यादा आश्चर्यजनक है मनुष्य का दुख दर्द, दुख से बड़ा कोई रहस्य नहीं। जाओ मेरे नगर को देखो और बताओ वहाँ क्या हो रहा है | धीरे-धीरे गौरैया के बताए हुए लोगों को राजकुमार अपनी मूर्ति में से सोने पत्र देता रहा, जिससे सभी लोग सुखी हो गए। धीरे धीरे ठंड बढ़ने लगी, बेचारी नन्हीं गौरेया ठंड से अकड़ने लगी, लेकिन वह उसे इतना प्यार करती थी कि वह उसे छोड़ नहीं सकती थी। अंत में उसे लगा कि उसके दिन करीब हैं, अब उसके परों में केवल इतनी शक्ति शेष थी कि वह राजकुमार के कंधों तक एक बार उड़ सकती थी।

ओहो! बड़ी खुशी हुई सुनकर कि आखिर तुम अब मिस्र देश जाने के लिए तैयार हो? मिस्र नहीं **मैं मृत्यु** क देश जाने की तैयारी कर रही **हूँ**। राजकुमार का चूमा और मरकर उसके पैरों में गिर पड़ी।

मूर्ति पर से भी सब कुछ **उखड़** चुका था। इसी समय मूर्ति के अन्दर से कुछ आवाज हुई। वास्तव में मूर्ति के अन्दर का जस्ते का दिल चटख गया था। दूसरे दिन मेयर अन्य सदस्यों के साथ टहल रहा था । **वहाँ** से गुजरे तो कहने लगे कितनी भद्दी लग रही है यह प्रतिमा। घोषणा की गई कि **वहाँ** से मूर्ति हटा दी जाये और कोई चिड़िया भी **वहाँ** मरने न पाए।

चूँकि वह मूर्ति अब सुन्दर नहीं है, उसका कोई उपयोग नहीं है, नगर के एक **सुप्रसिद्ध** कलाविज्ञ ने कहा। उसके बाद उन्होंने मूर्ति भट्टी में गलाई और कॉरपोरेशन की बैठक में यह प्रश्न उठा कि इसका क्या किया जाए। **यहाँ** पर एक दूसरी मूर्ति होनी चाहिए। मेयर ने कहा**-** मैं समझता **हूँ कि** मेरी मूर्ति ठीक रहेगी।

लोहा गलाने के कारखाने में मिस्त्री ने कहा–कैसा अचरज है यह टूटा **हुआ** जस्ते का दिल भट्टी में पिघल ही नहीं रहा है। उसने एक कूड़ेदान में उसे फेंक दिया वहीं **गौरैया** की लाश भी पड़ी थी। ईश्वर ने अपने देवदूत से कहा–मेरे लिए नगर की दो सबसे मूल्यवान **वस्तुएँ** ले आओ।

देवदूत वह जस्ते का दिल और **गौरैया** की लाश ले आया। ''ठीक बिल्कुल ठीक! ईश्वर ने कहा**-** "मेरे स्वर्ग की डालों पर यह **गौरैया** सदा चहकेगी और मेरे उपवन में राजकुमार सदा विहार करेगा।''

जीवन परिचय

जन्म - नाटककार, कवि और लेखक ऑस्कर वाइल्ड का जन्म 1854 में डबलिन आयरलैंड में हुआ था।

शिक्षा - उनकी आरंभिक शिक्षा डबलिन में हुई। उनकी आगे की शिक्षा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय लंदन में हुई थी।

रचनाएँ - सुखी राजकुमार व अन्य **कहानियाँ** द पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे वीमेन वर्ल्ड, कविताएं ।

साहित्य में स्थान -

उन्हें बच्चों की कविताओं पर पुरस्कृत किया गया। उनके लेखन की मुख्य विशेषता वाक–चातुर्य और हास्य व्यंग्य है।

मृत्यु - ऑस्कर वाइल्ड की मृत्यु सन् 1900 में हुई थी।